

कथई पुं. (देश.) खैर के रंग का, खैरा।

कथक पुं. (तत्.) 1. एक जाति जिसका काम नाचना, गाना और बजाना है 2. नृत्य की एक शैली।

कथा पुं. (तद्.) 1. खैर के पेड़ की लकड़ियों को उबाल कर निकाला गया रस 2. कथे का पेड़।

कत्त पुं. (अर.) वध, हत्या।

कथन पुं. (तत्.) कहना, बात, उक्ति।

कथनी स्त्री. (तत्.) बात, कथन; बकवास।

कथनीय वि. (तत्.) कहने योग्य, वर्णनीय।

कथमपि क्रि.वि. (तत्.) किसी भी प्रकार से, जैसे-तैसे।

कथरी स्त्री. (तद्.कन्था) वह बिछावन जो पुराने चिथड़ों को सिल कर बनाया जाता है, गुदड़ी।

कथांतर पुं. (तत्.) दूसरी कथा, किसी कथा के अंतर्गत गौण कथा।

कथा स्त्री. (तत्.) वह जो कही जाय, बात, यौ. 1. कथोपकथन-परस्पर बातचीत, धर्म विषयक कथाख्यान 2. कथामुख, कथारंभ, कथोदय, कथोदघात-कथा का प्रारंभिक भाग 3. कथापीठ-कथा का मुख्य भाग 4. उपन्यास का एक भेद 5. बात, चर्चा 6. समाचार।

कथाकार पुं. (तत्.) कथावाचक।

कथानक पुं. (तत्.) 1. कथा 2. छोटी कथा।

कथावस्तु स्त्री. (तत्.) नाटक या आख्यान आदि का कथन या कहानी।

कथावार्ता स्त्री. (तत्.) अनेक प्रकार की बातचीत।

कथित वि. (तत्.) 1. कहा हुआ 2. अपुष्ट कथन।

कथोपकथन पुं. (तत्.) बातचीत, वादविवाद।

कथ्य वि. (तत्.) कहने योग्य, कथनीय।

कदंब पुं. (तत्.) 1. एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसका फल गोल पीला होता है 2. समूह, खंड।

कद पुं. (अर.) शरीर का डील, ऊँचाई, लंबाई आदि।

कदम पुं. (अर.) 1. पैर, पाँव, पग मुहा. कदम उखड़ना- भाग जाना; कदम चूमना- अत्यंत आदर करना; कदम डगमगाना या लड़खड़ाना- डावाँडोल होना, ढीला पड़ना; कदम बढ़ाना- तेज चलना; कदम रखना- प्रवेश करना, पैर रखना; कदम पर कदम रखना- ठीक पीछे चलना, अनुकरण करना 2. चलने पर एक पैर से दूसरे पैर के बीच का अंतर।

कदर स्त्री. (अर.) आदर सम्मान यौ. कदरदान विलो. बेकदर।

कदर्थना स्त्री. (तत्.) 1. दुर्गति, बुरी दशा 2. अपमान, तिरस्कार।

कदली स्त्री. (तत्.) केले का पेड़।

कदा क्रि.वि. (तत्.) कब, किस समय।

कदाचन क्रि.वि. (तत्.) किसी समय, शायद।

कदाचार पुं. (तत्.) वि. बुरी चाल, बदचलनी।

कदाचारी वि. (तत्.) कुचाली, बदचलन।

कदाचित् क्रि.वि. (तत्.) कभी, शायद।

कदापि क्रि.वि. (तत्.) कभी भी, किसी समय।

कद्दावर वि. (अर.कद+फा.आवर) बड़े डील-डौल वाला, लंबा चौड़ा।

कद्दू पुं. (फा.कद्दू) सब्जी आदि के काम आने वाला लंबा व गोलाकार एक विशेष प्रकार का फल जो बेल पर लगता है, लौकी।

कद्दूकश पुं. (फा.) लोहे या पीतल की छोटी चौकी जिसमें ऐसे बहुत सारे छेद होते हैं, जिनका एक किनारा उठा हुआ और दूसरा दबा हुआ होता है। इस पर कद्दू आदि को रगड़कर/कस कर रायता आदि बनाते हैं।

कद्र स्त्री. (अर.) आदर, सम्मान, कीमत।

कद्रदान वि. (कद्र+दान, अर+फा.) आदर करने वाला, गुण पहचानने वाला।

कद्रदानी स्त्री. (अ.+फा.) गुण की परख, गुणज्ञता।

कन पुं. (तद्.) 1. किसी वस्तु का बहुत छोटा टुकड़ा, जर्ज़ा 2. कान यौ. कनकटा, कनफटा, कनटोप।